`कुसुम कुमार के समग्र साहित्य का : समीक्षात्मक अध्ययन`

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड की

पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रुपरेखा

: शोध कर्ता :

प्रा.इंदलकर सुभाष शंकराव

एम.ए. (हिन्दी), बी.एड्.

हिन्दी विभाग

श्री कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा

: शोध निर्देशक :

प्रा.डॉ.प्रविण विश्वनाथ कांबळे

एम.ए., बी.एड्., सेट, पीएच.डी.

हिन्दी विभागाध्यक्ष

श्री कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा

मार्च 2016

``रुपरेखा`

विषय :- **`कुसुम कुमार के समग्र साहित्य का : समीक्षात्मक अध्ययन`**

अनुक्रमणिका

भूमिका

प्रथम अध्याय :	हिन्दी नाट्य विधा की परिभाषा, स्वरुप और विशेषताओं का अध्ययन
द्वितीय अध्याय :	कुसुम कुमार का व्यक्तित्व एंव कृतित्व
तृतीय अध्याय :	कुसुम कुमार के नाटकों में सामाजिक चेतना का अनुशीलन
चतुर्थ अध्याय :	कुसुम कुमार के कविताओं का सामान्य अध्ययन
पंचम अध्याय :	कुसुम कुमार के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन
षष्ठम अध्याय :	कुसुम कुमार के एकांकी संग्रह, नुक्कड नाटक तथा नाट्यानुवाद का यथार्थ बोध
सप्तम अध्याय :	उपसंहार

परिशिष्ट अ - मुल ग्रंथसूची

संदर्भ सूची

`कुसुम कुमार के समग्र साहित्य का : समीक्षात्मक अध्ययन`

भुमिका :

साहित्य कलाओं में सर्वश्रेष्ठ है, यह रसास्वादन कराता है | उसमें हिन्दी नाटक मुलत: सामाजिक कला है | इसमें आयोजन से लेकर अवलोकन तक की सभी घटनाएँ समाज के परिप्रेक्ष्य में ही घटित होती है | रंगमंच का निर्माण, अभिनय का आयोजन, उपयुक्त वेशभुषा का अनुकरण आदि के लिए अनिवार्य रुप से समाज से ही अपेक्षा की जा सकती है | इस प्रकार नाटक का सृजन नाटककार द्वारा तथा प्रदर्शन समाज द्वारा सामाजिक के लिए किया जाता है | नाट्य रचना का मुख्य प्रेरणास्थल जनसमाज है | समाज में हो रही प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर ही नाटककार नाटक की रचना करता है | मुझे साहित्यिक विधाओं में रुची है | उसमें नाटक, कविता, उपन्यास, एकांकी संग्रह, नुक्कड नाटक तथा नाट्यानुवाद इन सभी पहुलओं को सुक्ष्मता से अध्ययन करना है | इसलिए मैं ने अपने गुरुवर्य प्रा.डॉ.प्रविण कांबळे सरजी से कुसुम कुमारजी का समग्र साहित्य पर अध्ययन करनी की अनुमति ली | नाट्यलोक स्वभावजम के निर्देशन से आचार्य भरतमुनीजी ने इसी बात की पुष्ठि की है कि, लोक स्वभाव नाटकीय उत्पत्ति का मुल प्रेरक तत्व है | सामाजिक जीवन में घटित होनेवाले विविध क्रियाकलाप, वेशभुषा, भाषा आदि के आधारपर ही नाटककार अपने नाटक में पात्र, रस, संवाद और नाटकीय तत्त्वों का समावेश करता है | नाटक विद्या के साथ-साथ कविता, उपन्यास, एकांकी, नाट्यानुवाद सभी विधाओं में समकालीन समाज का प्रभावशाली चित्रण किया है | उनका लेखन साहित्य सामाजिक अनुभूति पर निर्भर है |

विषय प्रवर्तन :

हिन्दी महिला नाटककारों में सन् अस्सी के दशक में कुसुम कुमार जी का मौलीक योगदान रहा है | समकालीन व्यक्ति और समाज जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण, सामाजिक विसंगति और भ्रष्टाचार का चित्रण, साम्प्रदायिक ठेकेदारों का बेनकाब, आठवे दशक के आजतक पुरी तरह नाट्यसृजन में सलग्न रहा है | कुसुम कुमार का लेखन साहित्य समाज की अनुभूतिपर निर्भर है | तथा उनकी अनुभूति की यथार्थता, मौलिक नाट्यलेखन और नाट्यानुवाद के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है | वर्तमान राजनीतिक परिवेश पर व्यंग्य, राजनीतिक छल, संघर्ष, निम्नवर्गीय समाज के अस्तित्व का संघर्ष, पुँजीपति और श्रमिकों का संघर्ष, वर्गसंघर्ष के द्वारा सामाजिक चेतना का चित्रण, शिक्षा संस्थानों की दुर्दशा का चित्रण, रिश्वत की समस्या, शिक्षा जीवन को सही दिशाबोध कराती है | शिक्षा क्षेत्र में फैली हुई अराजकता, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, रिश्वतखोरी, अध्यापकों का शोषण, विद्यार्थीयोंका शोषण, कर्मचारी समस्या, संस्थाचालकों की मनमानी, पैसों का बोलबाला आदियों का चित्रण किया है | अत: इन मुद्दों का अध्ययन किया जाएगा |

अनुसंधान की पध्दती :

अनुसंधान मानव की सहजात जिज्ञासा का ही विकसित रुप है | मानव के विकास में अनुसंधान का महत्तवपूर्ण योगदान रहा है | अनुसंधान के द्वारा नए तथ्यों की खोज की जाती है | आधुनिक युग की प्रगति का मुल कारण अनुसंधान ही है | अनुसंधान ज्ञान की वृध्दि एवं विकास में सहाय्यक है | प्रस्तुत शोध विषय `कुसुम कुमार के समग्र साहित्य का : समीक्षात्मक अध्ययन` है जिसका विस्तार से अध्ययन करना है |

इस शोध कार्य में आलोचनात्मक पध्दती, साक्षात्कार पध्दती तथा प्रश्नावली आदि पध्दती का उपयोग किया जाएगा |

`कुसुम कुमार के समग्र साहित्य का : समीक्षात्मक अध्ययन` इस शोध प्रबंध में भी अनेक पध्दतीयों का उपयोग किया जाएगा | शोध कार्य के अनुकुल साक्षात्कार लेकर उनकी साहित्यिक योगदान को समझने का प्रयास किया जाएगा | नाट्य साहित्य से संबंधित विभिन्न संदर्भ ग्रंथों को लेकर अध्ययन किया जाएगा | अत: इस शोध कार्य में शोधानुरुप कुछ नए अध्याय जुडेंगे और कुछ पुराने हटा दिए जाऐंगे |

अनुसंधान का उद्देश :

हिन्दी महिला नाटककारों में सन अस्सी के दशक में कुसुम कुमार के योगदान को रेखांकित करना इस शोध कार्य का उद्देश है | कुसुम कुमार आठवें दशक से आजतक पुरी तरह नाट्यसृजन में सलग्न रही हैं| उनका लेखन साहित्य सामाजिक अनुभूतिपर निर्भर है | उनके साहित्य में अनुभूति की अभिव्यक्ति मिलती है | उन्होंने अपने साहित्य में वर्तमान परिवेश पर जो व्यंग्य किया है, उसे इस शोध कार्य के द्वारा रेखांकित करना है | यही शोध कार्य का उद्देश है | उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक विषमता, भ्रष्टसत्ता, निम्नवर्गीय समाज के अस्तित्व का संघर्ष, पुँजीपति और श्रमिकों का संघर्ष प्रस्तुत किया है | इन संघर्षों के माध्यम से सामाजिक चेतना को प्रस्तुत किया गया है | उसे इस शोध कार्य द्वारा प्रस्तुत करना है | और इस शोध कार्य द्वारा कुसुम कुमारजी के मुल उद्देश को पाठकों तक पहूँचाना है | जो कि राष्ट्रीय एकता एवं मानव विकास के लिए उनकी सामाजिक चेतना महत्त्वपूर्ण मानी जाती है|

अनुक्रम :

प्रस्तुत शोध विषय को अध्ययन की दृष्टि से विभिन्न अध्यायों में विभाजित किया गया है | उनका लेखन अनेक विधाओं पर है | नाटक, कविता, उपन्यास, एकांकी संग्रह, नुक्कड नाटक तथा नाट्यानुवाद आदि है | आठवें शतक से

आजतक पुरी तरह नाट्यसृजन में सलग्न एक महिला रचनाकार कुसुम कुमार जी है । उनके सभी नाटक प्रयोगधर्मी है । शिल्पशैली और कथ्यगत प्रवृत्तियों की दृष्टि से नाटककार के नाटक नाटकीय धरातल पर खरे उतरे है । उन्होंने जीवन के विविध पहलुओं को प्रस्तुत किया है । कथ्य के स्तर पर इनकी सभी नाटक नई दृष्टिकोन, नए विषय की भावभूमि और नई भावभंगिमा लिए हुए है । इनके साहित्य का विषय क्षेत्र व्यापक रहा है । `कुसुम कुमार के समग्र साहित्य का : समीक्षात्मक अध्ययन` का अध्ययन की दृष्ट से शोध विषय को सप्तम अध्यायों में विभाजित किया गया है ।

प्रथम अध्याय :

हिन्दी नाट्यविधा की परिभाषा, स्वरुप और विशेषताओं का अध्ययन ।

द्वितीय अध्याय :

कुसुम कुमार का व्यक्तित्व एंव कृतित्व ।

तृतीय अध्याय :

कुसुम कुमार के नाटकों में सामाजिक चेतना का अनुशीलन ।

चतुर्थ अध्याय :

कुसुम कुमार के कविताओं का सामान्य अध्ययन ।

पंचम अध्याय :

कुसुम कुमार के उपन्यासों का समिक्षात्मक अध्ययन ।

षष्ठम अध्याय :

कुसुम कुमार के एकांकी संग्रह, नुक्कड नाटक तथा नाट्यानुवाद का यथार्थबोध ।

सप्तम अध्याय :

उपसंहार

1) प्रथम अध्याय :

प्रथम अध्याय में नाट्य विधा का स्वरुप बताते हुए नाटक की परिभाषा और नाटक के प्रकार तथा नाटक के तत्व आदि बतलाकर संस्कृत आचार्य, भारतीय विद्वान और पाश्चात्य् विद्वानों के मतों का अध्ययन किया जाएगा | इसके द्वारा कुसुम कुमार जी के नाटकोंका अध्ययन किया जाएगा |

1.1) नाटक की परिभाषा

1.2) नाटक का स्वरुप

1.3) नाटक की विशेषता

2) द्वितीय अध्याय :

द्वितीय अध्याय में कुसुम कुमार का व्यक्तित्व, जन्म, शिक्षा, पारिवारिक जीवन पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाएगा | साथ ही उनके समग्र साहित्य का विस्तार से अध्ययन किया जाएगा | ताकि उनके साहित्य को समझा जा सके |

2.1) जन्म

2.2) पारिवारीक वातावरण

2.3) शिक्षा

2.4) विवाह

2.5) जीवनसंघर्ष

2.6) पुरस्कार

2.7) कुसुम कुमार का कृतित्व

2.8) नाटक

2.9) कविता

2.10) उपन्यास

2.11) एकांकी संग्रह

2.12) नुक्कड नाटक

2.13) नाट्यानुवाद

3) तृतीय अध्याय :

तृतीय अध्याय में कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित सामाजिक चेतना है | अत: समाज की परिभाषा तथा सामाजिक चेतना की परिभाषा को समझकर चित्रित साम्प्रदायिकता पर प्रकाश डाला जाएगा | यह अध्याय उनके साहित्य का मूल बिंदु रहा है |

3.1) समाज की परिभाषा

3.2) समाजिक चेतना की परिभाषा

3.3) नाटकों में व्यक्त चेतना

3.4) ओम क्रांति क्रांति

3.5) सुनो शेफाली

3.6) संस्कार को नमस्कार

3.7) दिल्ली ऊँचा सुनती है

3.8) रावण लीला

3.9) पवन चतुर्वेदी की डायरी

3.10) लश्कर चौक

3.11) प्रश्नकाल

4) चतुर्थ अध्याय :

चतुर्थ अध्याय में कुसुम कुमार के कविताओं का अध्ययन किया जाएगा | उनके कविताओं में `नाम अभी रहेंगे`, `तृष्णांकित`, `रास्ते भर जंगल`, `तीन अपराध` आदि कविता संग्रहों का अध्ययन किया जाएगा | कविताओं में चित्रित मानव मूल्यों को रेखांकित करना इस अध्याय का मूल उद्देश है |

4.1) अभी रहेंगे

4.2) तृष्णांकित

4.3) रास्ते भर जंगल

4.4) तीन अपराध

5) पंचम अध्याय : कुसुम कुमार के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन |

पंचम अध्याय में कुसुम कुमार के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन करना है | उनके उपन्यासों में `हिरामन हाईस्कुल`, `पूर्वीद्वार`, `परदाबाडी` आदि प्रमुख हैं | जिनका विस्तार से अध्ययन कर मूल प्रेरणा को रेखांकित करना है |

5.1) हिरामन हाईस्कुल

5.2) पूर्वीद्वार

5.3) परदाबाडी

6) षष्ठम अध्याय :

षष्ठम अध्याय में एकांकी संग्रह, नुक्कड नाटक तथा नाट्यानुवाद का यथार्थ बोध का अध्ययन किया जाएगा | जिसमें प्रमुखत: से मादा मिट्टी, नुक्कड नाटक में सलामी मंच, विधिवत प्रजा, खाबगाह, सुखीजन / नाट्यानुवाद का यथार्थ बोध में हिमालय की छाया-वसंत कानेटकर, बिना चेहरों के पुरुष - वसंत कानेटकर, संध्या छाया - जयवंत दळवी, पापा खो गए - विजय तेंदुलकर, उसकी जात - विजय तेंदुलकर, सुर्यास्त - जयवंत दळवी आदि प्रमुख हैं |

6.1) मादा मट्टी (एकांकी संग्रह)

6.2) सलामी मंच (नुक्कड नाटक)

6.3) विधिवत प्रजा (नुक्कड नाटक)

6.4) खाबगाह (नुक्कड नाटक)

6.5) सुखीजन (नुक्कड नाटक)

6.6) हिमालय की छाया - वसंत कानेटकर (नाट्यानुवाद)

6.7) बिना चेहरों के पुरुष - वसंत कानेटकर (नाट्यानुवाद)

6.8) संध्या छाया - जयवंत दळवी (नाट्यानुवाद)

6.9) पापा खो गए - विजय तेंदुलकर (नाट्यानुवाद)

6.10) उसकी जात - विजय तेंदुलकर (नाट्यानुवाद)

6.11) सुर्यास्त - जयवंत दळवी (नाट्यानुवाद)

7) सप्तम अध्याय :

सप्तम अध्याय उपसंहार है | इस अध्याय में शोध प्रबंध के मूल निष्कर्ष को प्रस्तुत किया जाएगा | उनके साहित्य में सामाजिक चेतना दिखाई देती है | इस चेतना द्वारा मूल्यों की अभिव्यक्ति की गई है | जो शोध विषय का मूल उद्देश पूर्ण होता है |

परिशिष्ट - अ :

मूल ग्रंथसूची

संदर्भ सूची :

1) साहित्यिक शोध के आयाम - डॉ.शशिभूषण सिंहल

2) हिंदी नाटक - प्राक्कथन और दिशाएँ - डॉ.विजयकांतधर दुबे

3) समकालीन नाटकों में सामाजिक चेतना - डॉ.कपिला म.पटेल

4) कुसुम कुमार का नाट्यसाहित्य - दीपा कुचेकर

5) आधुनिक हिन्दी नाटक - डॉ.नगेन्द्र

6) आधुनिक हिन्दी नाटकों में संघर्ष तत्व - डॉ.ज्ञा.का.गायकवाड

शोधकर्ता
प्रा.इंदलकर सुभाष शंकरराव
एम.ए., बी.एड्.
श्री कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा

शोध निर्देशक
प्रा.डॉ.प्रविण विश्वनाथ कांबळे
एम.ए., बी.एड्., सेट, पीएच.डी.
विभागाध्यक्ष
श्री कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा